विज्ञान रेडियो सीरियल फार्मेट- डॉक्यूड्रामा

एपिसोड -23

गरमाती धरती, बदलती बीमारियाँ

मुख्य शोध एवम् आलेख: डा0 अरविन्द दुबे

(सिग्नेचर ट्यून.....फेड्स आउट)

(शीर्षक गीत.....फेड्स आउट)

उद्घोषिका- दोस्तो धारावाहिक (धारावाहिक का नाम) की पिछिली कड़ी में आप ने सुना (पिछली कड़ी का सार संक्षेप)। मानव के क्रियाकलापों से, उद्योग-धंधों, कल-कारखानों से निकलने वाले धुएं से हमारे वातावरण में ग्रीनहाउस गैसों, खासकर कार्बन डाइऑक्साइड गैस की बहुत बड़ी मात्रा वातावरण में रोज आकर मिल रही है। इससे पृथ्वी का वातावरण दिन पर दिन गर्म होता जा रहा है। एक अनुमान के अनुसार इस शताब्दी के अंत तक पृथ्वी के तापक्रम में 5 डिग्री सेंटीग्रेड तक की वृद्धि हो सकती है इससे पृथ्वी के ग्लेशियर कम होंगे, समुद्रों का जल स्तर बढ़ेगा, दलदल बढ़ेगा। यह सब तो होगा ही जिससे पृथ्वी पर रहने वाले जीवधारी बुरी तरह प्रभावित होंग। इसके मानव स्वास्थ्य पर सीधे-सीधे असर के अलाव ये दूसरि तरह से भी मानव स्वास्थय को प्रभावित करेंगे यानि कि बीमारियां बढ़ेंगीं। वे जगहें जहां अब तक तापक्रम कम होने से रोगाणुओं के बाहक जैसे मच्छर- मक्खी खास किस्म की किल्लियां आदि पनप नहीं पाते थे वे अब वहां तापक्रम बढ़ने से पनपने लगे हैं । जहां इनकी मात्रा कम थी वहां इनकी संख्या बढ़ रही है। तापक्रम बढ़ने से इनमें से बहुत सारे वाहकों के जीवन चक्र कम समय में ही पूरे होने लगे हैं। अंडों से निकल कर जीवित बचने वाले वयस्कों की संख्या भी बढ़ रही है। दूसरी ओर रोग पैदा करने वाले रोगाणुओं के जीवन चक्र भी इस तापक्रम परिवर्तन से प्रभावित होने लगे हैं। मानव स्वास्थ्य से, बीमारियों से, उनके प्रसार और कारकों से जुड़े ऐसे ही तथ्यों पर हम बात करेंगे आज के इस एपिसोड में। सुना है वर्षा भाभी आज बहुत परेशान है। केन्या में नौकरी के लिए गए उनके भाई को मलेरिया हुआ है। वह भी खतरनाक मलेरिया।

शब्द दृश्य-1

(ओपनिंग गीत.....फेड्स आउट)

स्थान- घर की बैठक।

(सवेरे का समय है। ड्राइंगरूम में टेलीवीज़न पर खबरें आ रही हैं। पापा खबर सुनने में मस्त है। अंदर से माँ की आवाज़ आती है।)

अंदर से आता एक स्त्री स्वर- अरे सुनते हो .....

मेधा- पापा, लगता है माँ बुला रही है।

(पापा वाल्यूम कम करते हैं। अंदर से फिर एक बार वही आवाज़ आती है।)

अंदर से आती आवाज- अरे सुनो भी.....

पापा- मेधा बिटिया ज़रा देख कर आ क्या कह रही है तुम्हारी माँ.....

मेधा- पापा इस विवेक को भेजो न, जब देखो आप मेरे को ही कहते हो, ...विवेक भइया जाके देख न?

(किसी की तेज पदचाप)
(माँ का आगमन)

माँ- (क्रोधित स्वर में) आग लगे तुम्हारे टी0वी0 में। कितनी देर से चिल्ला रही हूँ पर यहां कोई सुने तब न । चाहे कोई मर ही क्यों न रहा हो पर तुम लोग तो.....

पिता- वसुधा....वसुधा क्या बात है इतनी परेशान क्यों हो .....अरे मैने तो इस मेधा से कहा कि जा के सुन माँ क्या कह रही है पर इसने विवेक पर टाल दिया ।

माँ- यह दोनो भाई-बहन तो परले दरजे के आलसी है इन्हें खुद कोई चौबीस घंटे का नौकर चाहिए।

पिता- जाने दो .....जाने दो, अब बताओ क्या बात है ?

वसुधा- बड़े भइया की तबियत काफी खराब है ।

मेधा- कौन से, वे नैरोबी वाले मामा?

वसुधा- हाँ-हाँ, वही ।

पिता- क्यों, उन्हें क्या हुआ ?

वसुधा -भाभी बता रही थी कि मलेरिया हुआ है ।

पिता- मलेरिया? वह तो नैरोबी के पास कहीं पहाड़ की तरफ पोस्टेड थे ।

वसुधा- उससे क्या ?

पिता- अरे शादी से पहले मैं भी वहां डेपुटेशन पर कई साल रहा हूँ । वहां तो मलेरिया जैसा कुछ नहीं होता था।

वसुधा- उस बात को 25 साल हो गए हैं, एक चौथाई शताब्दी। तब नहीं होता होगा पर अब तो होता है। कहते हैं सारे का सारा घर बुखार में पड़ा है।

पिता- अच्छा

वसुधा- बाकी सारे तो ठीक होने लगे हैं, पर भइया की तबियत काफी खराब है। अब कैसे वहां पहुंचू? यहां कहीं होते तो भाग कर देख आती।

पिता- वह तो है, पर ताज्जुब है, केन्या के पहाड़ी इलाके तो ठंडे इलाके हैं। यहाँ तो मच्छर ही नहीं होते थे.....बड़े सुकून की जगह थी वो तो।

वसुधा- पर अब मच्छर कहाँ नही होते .....पहाड़ हो या रेगिस्तान ? वैसा वहां भी होगा।

मेधा- माँ ये जो वायुमंडल में गरमी बढ़ती जा रही है , ग्लोबल वार्मिंग, सब उसी की वजह से है।

वसुधा- (चिढ़ कर) अच्छा-अच्छा रहने दे मेधा, हर बात में तू अपनी वह क्या कहते हैं, ग्लोबल वारमिंग न घुसाया कर.....तुम लोग पढ़ लिख कया गए, माँ को तो बेवकूफ समझने लगे हो ।

विवेक- और ले, बड़ी मास्टरनी बनी फिरती है। माँ को पढ़ाएगी ? माँ तेरे जैसी 50 को सिखा दें।

मेधा- अरे विवेक, तू तो रहने ही दे.....अक्ल का ठस, बस गाल बजाने भर का है ।

माँ- (चिल्ला कर क्रोध में) चोप्प (कुछ रूक कर भरे गले से) भइया को कुछ होगा तो नहीं ?

पिता- अरे नहीं मलेरिया ही तो है। सब ठीक हो जायेगा। अब वह पुराना समय कहां रहा जब मलेरिया से हज़ारों मौते होतीं थीं।

वसुधा- फिर भी.....भाभी रो रही थीं। कह रही थीं कि यहां मलेरिया काफी खतरनाक होता है। वहां मलेरिया का तो जैसे रिवाज चल पड़ा है। कोई ऐसा घर नहीं है जिसमें करीब-करीब सबको कभी न कभी मलेरिया न हुआ हो ?

मेधा- अच्छा ये मामी ने बताया ?

माँ- हां वहां लोग तो मलेरिया से मर भी जाते हैं, इतना खतरनाक होता है। भाभी बड़ी परेशान हैं।

पिता- हूँ, ठीक है। देखो मुझे तो इस बारे में कुछ खास मालूम नही है, पर मेरा एक बचपन का साथी यहीं पर पोस्टेड है। सुना है वह ज़िला मलेरिया ऑफीसर है। उससे चल कर बात करते हैं। फिर तुम्हारी भाभी से बात करेगें।

वसुधा- ज़रूर.....

(दृश्य परिवर्तन संगीत.....फेड्स आउट)

शब्द *दृश्य* -2

(ओपनिंग संगीत.....फेड्स आउट)

स्थान- अस्पताल में डा0 शेखर का कमरा .....

मेधा- पापा, ये हम लोग कहां आए हैं ? ये तो जिला अस्पताल है।

पापा- हाँ, मेधा, यहीं तो तुम्हारे डा0 शेखर अंकल मिलेंगे, जिनसे तुम्हारी माँ कुछ पूछना चाहती है।

विवेक- पापा, ये शेखर अंकल आपके क्लास फैलो हैंस?

पापा- हाँ, विवेक इंटरमीडिएट में हम लोग साथ-साथ पढ़ते थे ।

मेधा- ये अंकल डाक्टर हो गए और आप प्रोफेसर, क्यों पापा ?

पापा- हाँ मेधा ।

विवेक- पापा ये रहा डा0 शेखर को बोर्ड, यहीं है वे ।

पापा- गुड विवेक, यही हैं.....

(सब कमरे में प्रवेश करते हैं)

पापा- शेखर, आ जाएँ हम ?

शेखर- (आश्चर्य मिश्रित स्वर) .....सागर! आज कैसे रास्ता भूल गए.....अरे .....भाभी जी भी हैं और ये बच्चे भी ? .....बैठो..... सागर तुम भी बैठो । खैरियत तो है ?

पापा- वही तो नहीं है ।

शेखर- क्या कोई बीमार है ? भले-चंगे तो दिख रहे हो आप सब .....

पापा- हम सब तो ठीक हैं पर तुम्हारी भाभी के एक भाई केन्या में नैरोबी के पास रहते हैं।

शेखर- तो

विवेक- शेखर अंकल मामा को वहां मलेरिया हो गया है ।

शेखर- मलेरिया ?

पापा- हाँ शेखर.....मैने कहा कि मलेरिया ही तो है। दवा लेगें तो ठीक जाएंगे पर तुम्हारी भाभी हैं कि डरे ही जा रहीं हैं।

शेखर- अच्छा.....

वसुधा- हाँ भाई साहब.....वहां भाई की मिसेज़ कह रही हैं कि वहां मलेरिया बड़ा खतरनाक होता है। इससे लोगों की मौतें भी हो रही है ।

पापा- हाँ.....अब देखो दोनों ननद-भाभियों नें ज़रा सी बात को लेकर तूफान खड़ा कर दिया है। वहां वह रो रही हैं, यहां यह रोए जा रही हैं, फालतू में ।

शेखर- भाभी की चिंता वाजिब है।

पापा- क्या शेखर तुम भी सोचते है कि मलेरिया से लोग मर जाते हैं?

शेखर- हाँ मर जाते हैं, खास कर अगर मलेरिया का असर मस्तिष्क पर हो जाए तो ।

वसुधा- देखा मैं ठीक कहती थी न?

मेधा- पर अंकल मेरी तो कई क्लासमेट्स को मलेरिया हुआ पर वे सब तो दो-तीन एबसेन्ट रह कर वापस स्कूल आने लगे।

शेखर- देखो मेधा, हमारे यहां तो खतरनाक ''सेरिब्रल मलेरिया'' के मामले काफी कम होते हैं पर जहां आपके मामा रहते हैं न नैरोबी के पास वहां मलेरिया अक्सर सेरिब्रल मलेरिया में बदल जाता है।

पापा- वह क्यों शेखर ?

विवेक- वहां के मच्छर बड़े खतरनाक होते होगें।

शेखर- नहीं विवेक ऐसा नहीं होता है।

विवेक- तो ?

शेखर- चूँकि वहां पहले मलेरिया नही होता था इस लिये वहाँ के लोगों में मलेरिया के प्रति रोग प्रतिरोधक क्षमता विकसित नही हुई है।

मेधा- ऐसा क्यों ?

शेखर- मेधा जब कभी हम एक बार मलेरिया जीवाणु के सम्पर्क में आते हैं तो हो सकता है कि हमें मलेरिया न हो पर इसके बाद हमारे शरीर की इम्यून कोशिकाओं को मलेरिया जीवाणु की पहचान हो जाती है।

वसुधा- इससे क्या होता होगा भाई साहब?

मेधा- माँ एक बार किसी रोग वाहक के सम्पर्क में आने पर हमारा शरीर उसके खिलाफ एंटीबोडी बनाने लगता है जिससे अगली बार जब वह रोग वाहक शरीर में प्रवेश करे तो शरीर उसे नष्ट कर सके।

सागर- शेखर, शायद इसे ही इम्यूनिटी या ''रोग प्रतिरोधक क्षमता'' कहते हैं ?

शेखर- हाँ, सागर हमारे भारतीय माहौल में तो हर साल में कई बार मलेरिया रोगाणु से हमारी मुठभेड़ होती रहती है और धीरे-धीरे हमारे शरीर मलेरिया के प्रति रोग प्रतिरोधक क्षमता विकसित कर लेते हैं। इस लिये हमारे लिये आमतौर पर मलेरिया इतनी खतरनाक बीमारी साबित नहीं होती।

वसुधा- पर भाई साहब, वहां केन्या में नैरोबी में क्यों ? वहां यह इतनी खतरनाक क्यों हो जाती है ?

शेखर- भाभी अभी मैं हाल में ही विश्व स्वास्थय संगठन की एक बैठक में भाग लेकर लौटा हूँ।

सागर- ये कहो सरकारी खर्चे पर विदेश यात्रा करके आए हो।

शेखर- वहाँ जाकर मुझे मलेरिया के बारे में कई आश्चर्यजनक बातें पता लगीं।

मेधा- आश्चर्यजनक बातें, वह क्या?

शेखर- एक तो ये कि उन्नीसवीं शताब्दी तक न वहां केन्या में न मच्छर होते थे, न मलेरिया।

विवेक- वह क्यों शेखर अंकल ?

शेखर- बताता हूँ, पहले अंग्रेज़ों ने वहां बस्तियाँ बसाई तो वे मलेरिया से बचने के लिए इन क्षेत्रों में आकर रहते थे। क्योंकि यहाँ मलेरिया होता ही नहीं था।

मेधा- वह क्यों अंकल ?

शेखर- वहां के वातावरण के कारण ।

सागर- कैसा वातावरण?

शेखर- मलेरिया फैलाने वाले एनाफिलीज प्रजाति के मच्छर उन्हीं जगहों पर अपना जीवन चक्र आसानी से पूरा कर पाते हैं जहाँ का तापक्रम 16 डिग्री सेंटीग्रेड से ज़्यादा रहता है।

विवेक- और इन जगहों का तापक्रम इससे कम रहता होगा, और इतनी सर्दी में तो बहुत ही कम हो जाता होगा।

मेधा- वाह क्या तुक्का लगाया है, शाबास विवेक ।

शेखर- नहीं मेधा विवेक ठीक कह रहा है।

बसुधा- तो, फिर अब क्या हो गया भाई साहब?

शेखर- भाभी हमारी कारगुजारियों से धरती गरम होती जा रही है, वायुमंडल का तापक्रम बढ़ रहा है।

सागर- ग्लोबल वार्मिंग ग्लोबल वार्मिंग का मलेरिया से क्या लेना देना?

शेखर- लेना देना है सागर, ग्लोबल वार्मिंग से वातावरण का तापक्रम बढ़ा। वह स्थान जो मरीजों के लिए उपयुक्त नहीं थे वहां का वातावरण मच्छरों के लिए अनुकूल होने लगा सागर अच्छा शेखर सागर जहां भाभी जी के भाई रहते हैं वह ईस्ट अफ्रीकन हाइलैंड के अंतर्गत आता है इसमें और भी कई देश आते हैं।

मेधा- पता है अंकल वहां कई ऊंची ऊंची पर्वत श्रृंखलाएं हैं। माउंट केन्या, माउंट किलिमंजारो; जिससे वहां का मौसम ठंडा और बड़ा सुहाना होता है।

शेखर- इसीलिए तब वहां मलेरिया नहीं होता था क्योंकि मलेरिया के रोगाणु फैलाने वाले एनाफिलीज मच्छर ऐसे वातावरण में पनप नहीं सकते थे.

मेधा- जब मलेरिया नहीं होता होगा तो लोगों में मलेरिया के प्रति रोग प्रतिरोधक क्षमता भी नहीं होती होगी, क्यों अंकल शेखर- हां मेधा, पर धीरे-धीरे ग्लोबल वार्मिंग के कारण वहां वर्फ़ के ग्लेशियर पिघलने लगे, वातावरण का तापक्रम बढ़ाऔर मच्छरों को पनपने का मौका मिला और वहां भी मलरिया शुरू हो गया।

वसुधा- तो ग्लोबल वार्मिंग लेकर आई मलेरिया और ग्लोबल वार्मिंग आप बता रहे हो कि हमारे कारण हुई है मतलब वहां मलेरिया होने की वजह हम इंसान ही हैं।

शेखर- कुछ ऐसा ही समझ लो भाभी।

मेधा- और जब ऐसे इंसानों में वहां मलेरिया शुरू हुआ जिन में पहले से मलेरिया रोग वालों के प्रति रोग प्रतिरोधक क्षमता नहीं थी तो उनके लिए यह जानलेवा बन गया।

वसुधा- तभी भाभी जी का फोन आया है कि वहां मलेरिया से मौतें हो रही है क्योंकि उन लोगों में मलेरिया के प्रति इम्यूनिटी ही नहीं थी।

पापा- पर इनके भाई तो इंडिया से हैं जहां लोगों की मलेरिया से इतनी बात मुलाकात होती है उन्हें प्राकृतिक रूप से मलेरिया के प्रति इम्यूनिटी पैदा हो जाती है।

शेखर- सही कह रहे हैं आप सागर, हम भारतीय मलेरिया के खिलाफ काफी मजबूत होते हैं।

वसुधा- तो भाई साहब को मलेरिया से कोई बड़ा खतरा नहीं है न?

शेखर- हां भाभी जी लगता तो ऐसा ही है।

विवेक- देखा पापा इस ग्लोबल वार्मिंग ने क्या क्या बदल डाला है, यहां तक कि बीमारियों का पैटर्न भी?

शेखर- तुम ठीक समझे विवेक।

विवेक- मगर ऐसा क्यों होता है शेखर अंकल?

शेखर- विवेक ग्रीन हाउस गैसों के प्रभाव से वायुमंडल और पृथ्वी का तापक्रम बढ़ता जा रहा है। अनुमान है इस शताब्दी के अंत तक प्रथ्वी का तापक्रम साढे 5 डिग्री से भी अधिक बढ़ सकता है।

वसुधा- तो शेखर भाई साहब?

शेखर- भाभी जी इससे वातावरण में भारी वदलाव आएंगे। कहीं बारिश ज्यादा होने लगेगी तो कहीं सूखा ज्यादा पड़ेग॥

मेधा- गर्मी बढ़ने से मच्छर कीट- पतंगे आसानी से आसानी से पनपेंगे और फ़िर इनसे फैलने वाली बीमारियां भी बढ़ेंगी। शेखर-हां मेधा, चीन के अन्हुई प्रांत में पहले मलेरिया के एक के दो के मामले ही देखने को मिलते थे पर सन 2000 से इस प्रांत में तो जैसे मलेरिया की महामारी फ़ैलने लगी है।

सागर- तो क्या यह भी ग्लोबल वार्मिंग की वजह से है?

शेखर- और नहीं तो क्या सागर?

वसुधा- शेखर भाई साहब तो क्या इस ग्लोबल वार्मिंग का असर सिर्फ मलेरिया बुखार पर ही पड़ता है?

शेखर- अरे नहीं भाभी, मलेरिया के अलावा भी बहुत सारी बीमारियां हैं जो आजकल उन जगहों पर फैल रही है जहां वह पहले कभी कभार ही देखने को मिलती थी।

मेधा- बहुत सारी बीमारियां?

शेखर- हां मेधा बहुत सारी जैसे कि चागास डिसीज लैशमेनिएसिस, लाइम डिसीज, बेबिओसिस, आंत्रक्रमि, एंथ्रेक्स,हैज़ा, दस्तों के रोग, डेंगू, ज़ीका वायरस, कहां तक गिनाएं?

विवेक- चागास डिसीज, यह क्या शेखर अंकल?

शेखर- विवेक, यह एक एककोशिकीय जीव ट्रिपेनोसोमा से होने वाली एक खतरनाक बीमारी है।

मेधा- शेखर अंकल हमने तो बायलॉजी में पढ़ा था कि ट्रिपैनोसोमा से तो स्लीपिंग सिकनेस होती है जिसमें दिन में बहुत नींद आती है।

शेखर- तुम ठीक जानती हो। ट्रिपैनोसोमा की एक प्रजाति ट्रिपैनोसोमा ब्रूसिआई से अफ्रीकन स्लीपिंग सिकनेस होती है जिसे टिसी टिसी मक्खियां फ़ैलाती हैं।

मेधा- पर आप तो चागास डिजीज.....

शेखर- (बात काटकर) पर एक प्रजाति ट्रिपैनोसोमा क्रूज़िआई से चागास डिजीज होती है।

विवेक- ओ हो

शेखर- और यह ट्रिपैनोसोमा क्रूज़िआई फ़ैलते हैं ट्रायटोमाइन कीटों से।

विवेक- ट्रायटोमाइन कीट शेखर अंकल?

शेखर- हां विवेक चूंकि ये हमेशा चेहरे पर ही काटते हैं इसलिए इन्हें “किसिंग बग” भी कहते हैं।

मेधा- किसिंग बग, मजेदार नाम शेखर अंकल

शेखर- पर उतने ही खतरनाक, यह कीट रात में आकर चेहरे पर काटते हैं और वही पर मल त्याग कर देते हैं।

विवेक- अद्भुत, तुरंत बाद ही

शेखर- हां विवेक इन के मल में ये ट्रिपैनोसोमा क्रूज़िआई होते हैं। कीट के काटने से खुजली होने पर व्यक्ति जब खुजलाता है तो ये ट्रिपैनोसोमा युक्त मल काटने से बने ताजे घाव के जरिए शरीर में प्रवेश कर जाता है।

मेधा- और इस तरह ये ट्रिपैनोसोमा कीट से मानव में पहुंच जाते हैं।

शेखर- हां मेधा पहले दो-तीन हफ्तों में काटे गए स्थान पर हल्की सूजन आती है यह आमतौर पर आंखों के आस-पास होती है। इसके आसपास की या गर्दन की गांठों में सूजन आ जाती है, हल्का बुखार आता है।

मेधा- मतलब आम बुखार जैसा..... अलग से कुछ नहीं होता?

शेखर- हां मेधा, दो तिहाई लोग तो इतने में ही निपट जाते हैं और मामला खत्म।

विवेक- और बाकी के एक तिहाई?

शेखर- विवेक बाकी में बीमारी 10 से 30 साल बाद फिर उभरती है। अब यह हृदय को अपनी चपेट में ले लेती है जिससे हृदय का आकार बढ़ जाता है अंततः यह अपना कार्य सही ढंग से नहीं कर पाता है और रोगी की.....

विवेक- मौत हो जाती है ना शेखर अंकल?

वसुधा- पर शेखर भाई साहब इसका ग्लोबल वार्मिंग से क्या रिश्ता है?

शेखर- रिश्ता है, भाभी जी रिश्ता है।

सागर- वह कैसे शेखर?

शेखर- भाभी पहले यह बीमारी लेटिन अमेरिका और दक्षिणी अमेरिका में बहुतायत से होती थी।

सागर- तो?

शेखर- पर अब तो यह उत्तरी अमेरिका में बखूबी दस्तक दे चुकी है, जहां यह पहले बिल्कुल नहीं होती थी। जानते हो क्यों? सागर- क्यों?

शेखर- क्योंकि ग्लोबल वार्मिंग के चलते वहां का बदला तापक्रम ट्राइटोमाइन कीटों को रास आने लगा है।

वसुधा- मतलब अब वहां भी वह क्या कहते हैं.....

विवेक- चागास डिसीज.....

वसुधा- हां चागास डिसीज होने लगी है।

शेखर- हां भाभी होने ही नहीं लगी है, और ज्यादा खतरनाक भी होने लगी है।

मेधा- वह क्यों शेखर अंकल?

शेखर- जब वातावरण का तापक्रम 30 डिग्री सेंटीग्रेड तक बढ़ जाता है तो इन कीटों को ज्यादा प्यास लगती है और इसे बुझाने के लिए वे बार-बार काटते हैं। वातावरण का तापक्रम बढ़ने से वे जल्दी ही वयस्क हो जाते हैं और खून चूसना शुरू कर देते हैं और संख्या में भी तेजी से बढ़ते हैं।

मेधा- शेखर अंकल किसी अखबार के रविवार के संस्करण में मैंने पढ़ा था कि फाइलेरिया भी तेजी से बढ़ रहा है।

वसुधा- तो क्या यह भी ग्लोबल वार्मिंग की वजह से है?

शेखर- हां भाभी फाइलेरिया का रोगाणु बुचरेरिया भी तो मच्छरों द्वारा ही फैलाया जाता है।

सागर- तो?

शेखर- पिछिली संक्रामक रोगों की मीटिंग में इस पर काफी चर्चा हुई थी।

सागर- क्यों?

शेखर- यदि ग्लोबल वार्मिंग की रफ्तार यही रही तो सन 2050 तक फाइलेरिया के रोगियों की संख्या करीब 3 गुनी हो जाएगी।

वसुधा- तब तो बहुत ही बुरा हाल है इस ग्लोबल वार्मिंग के मारे.....

शेखर- ग्लोबल वार्मिंग से उन जगहों पर जहां पहले मौसम काफी ठंडा था, वहां बीमारियां या तो बढ़ रही हैं या ज्यादा खतरनाक होती जा रही हैं या फिर वे बीमारियां हो रही हैं जो वहां होती ही नहीं थीं।

वसुधा- यानी ठंडे देशों में मुसीबत ज्यादा है शेखर भैया?

शेखर- हां भाभी। कनाडा, इंग्लैंड और अमेरिका के ठंडे हिस्सों में एक खास किस्म का खटमल जैसा जीव होता है जिसे काली टांगों वाला खटमल या डीयर टिक कहते हैं।

विवेक- मतलब हिरन की किल्ली?

शेखर- यही कह लो, वैसे इसका नाम है इक्जोडिस टिक।

मेधा- इक्जोडिस टिक?

शेखर- मेधा ये एक तो बैक्टीरिया से होने वाली एक बीमारी जिसे "लाइम डिसीज" कहते हैं, फ़ैलाते हैं तो दूसरी ओर ये एक कोशिकीय जीवों से होने वाली बीमारी बेबियोसिस को फैलाने में मदद करते हैं।

सागर- तो इसमें क्या?

वसुधा- हां शेखर भाई साहब इसमें भी कोई ग्लोबल वार्मिंग.....?

शेखर- हां भाभी जिस कॉन्फ्रेंस का पहले मैंने जिक्र किया था उसमें इस कीट को लेकर बड़ी फिक्र थी।

सागर- क्यों?

शेखर- एक तो यह दोनों ही बीमारियां बहुत खतरनाक है और अब तो ये कनाडा और रूस के ठंडे इलाकों, इंग्लैंड और अमेरिका के उन क्षेत्रों में पाए जाने लगीं हैं जहां पहले कभी इनको देखा ही नहीं गया था।

वसुधा- क्यों?

शेखर- शायद इसलिए कि ग्लोबल वार्मिंग की वजह से इन जगहों का तापक्रम और बढ़ा और यह तापक्रम इन के लिए एकदम फिट था।

मेधा- तब तो यह फिक्र की बात हुई शेखर अंकल?

शेखर- हां मेधा, इसके अलावा यह किल्लियां जिन रोगों को.....

मेधा- (बात काटकर) लाइम डिसीज और बेबियोसिस.....

शेखर- हां हां वही लाइम डिसीज और बेबियोसिस को फैलातीं थी उनकी गंभीरता भी बदले तापक्रम के साथ बढ़ रही है।

वसुधा- आखिर में इंसान को अपने किए का फल भोगना ही पड़ता है।

सागर- हां किया धरा तो यह सब इंसान का ही है पर कुछ चीजें ऐसी थीं जिन्हें इंसान चाह कर भी रोक नहीं सकता था। विवेक- वह क्या?

शेखर- जैसे बढ़ते उद्योग धंधे, इंधनों का प्रयोग। हां कुछ चीजों के प्रयोग में उसने अति की है।

मेधा- अब अमेरिका को ही लो। ग्रीन हाउस गैसों का बहुत बड़ा भाग सिर्फ अमेरिका के बाशिंदों की वजह से ही है और वे इस पर अंकुश लगाने को भी तैयार नहीं हैं।

वसुधा- पर आखीर में तो उन्हें समझना ही होगा

शेखर- समझेंगे, पर तब तक देर ना हो जाए।

(दृश्य परिवर्तन संगीत.....फेड्स आउट)

शब्द दृ*श्य*-3

(ओपनिंग संगीत.....फेड्स आउट)

स्थान- घर की बैठक

(प्रशांत, सागर, मेधा और विवेक अभी-अभी शेखर के यहां से लौटे हैं।)

मेधा- पापा वैसे शेखर अंकल हैं बहुत इंटेलीजेंट।

सागर- क्या खाक इंटेलीजेंट, यह तो उसका रोज का काम है। अभी-अभी विश्व स्वास्थय संगठन की बैठकों से लौटा है तो ज्ञान से लबालब भरा है।

वसुधा- आपके दोस्त है ना इसलिए, वैसे उनकी बातें हैं एकदम सच्ची।

विवेक- कौन सी बातें मां?

वसुधा- वही बीमारी वाली, जब हम बच्चे थे तो कहां होती थी चिकनगुनिया और डेंगू?

मेधा- पर मां तब मलेरिया तो था। मलेरिया से कितनी मौतें होती थीं, कितने लोग मरते से टी बी से, दस्तों से, हैजै से, बोलो?

वसुधा- वह तो इसलिए था कि दवाइयां इलाज और जांच के साधन तब अच्छे नहीं थे।

सागर- मतलब तब से बीमारियां बढ़ीं हैं ।

वसुधा- बिल्कुल, शेखर भाई साहब भी तो यही कह रहे थे कि इस ग्लोबल वार्मिंग से ही बीमारियां न सिर्फ बढ़ीं हैं वरन खतरनाक भी होने लगी हैं मेरा और उन जगहों पर भी होने लगी है जहां वे पहले नहीं होती थीं।

(दृश्य परिवर्तन संगीत.....फेड्स आउट)

नेरेटर- दोस्तो तो आज रेडियो धारावाहिक की इस कड़ी में आप ने सुना कि कैसे पृथ्वी के बढ़ते तापक्रम के साथ कैसे बदल रही हैं बीमारियां, कैसे पैदा हो रही है नई बीमारियां, कैसे पुरानी बीमारियां और खतरनाक हो रही हैं। धारावाहिक की अगली कड़ी में हम बात करेंगे बढ़ते भौगोलिक तापन के कारण मानव स्वास्थ्य पर बढ़ते खतरों के बारे में, कौन सी बीमारियां हैं जो इस शताब्दी में महामारी की तरह आएंगी किन बीमारियों की मारक क्षमता और बढ़ सकती है, कौन सी नई बीमारियों से हो सकती है हमारी मुलाकात? तो ज़रूर सुनिए आज के ही दिन, आज के ही समय रेडियो धारावाहिक की अगली कड़ी, तब तक के लिए नमस्कार।